कबीर के वाक्य में रहस्य और समाज की समकालीन प्राथमिकता

ज्योति कुमारी,
शोधार्थी
Jyotikumari30011993@gmail.com

भारतीय धर्म साधना के इतिहास में कबीर महान विचारक एवं प्रतिभाशाली महाकवि है । इनका जन्म 1398 ई0 में हुआ था । कबीर सिकन्दर लोधी से समकालीन थे । कबीर का जन्म उच्च कुल की विधवा के गर्भ से हुआ था । जिसमें लोकापबाद के भयं से इन्हें लहरतारा नामक तालाब के किनारे छोड़ दिया था । भाग्यवंश नीरू नामक जुलाहा अपनी पत्नी नीमा के साथ वहॉ से गुजर रहा था । जो इन्हें उठाकर घर ले गया एवं इनका पालन –पोषण किया । यह गुरू रामानन्द के शिष्य थे । इनकी दो संतानें थी । पत्नी का नाम लोई तथा पुत्र व पुत्री का नाम कमाल व कमाली था इनका प्रारम्भिक जीवन काशी व अन्तिम जीवन मगहर में बीता । निरक्षर होने के पश्पात् भी कबीर बड़े–कड़े दार्शनिकों, विद्वानों के कपन को कागज की लेखी कहकर ठुकरा देते थे । ताकिक्ता के क्षेत्र में अत्यन्त शुश्ट, हयूसहीन, तीक्ष्ण प्रतीत होने वाले कबीर भक्ति की भावधारा में बहते समय सबसे आगे दिखाई देते है । कबीर ने स्वयम को निरक्षर स्वीकार किया है ।

मसि कागद छुयो नहीं, कलम गहौ नाहि हाथ ।

कबीर की रचनाओं का संकलन 'वीजक' है । इसके संकलनकर्ता धर्मदास है । वीजक के तीन भाग है – साखी, सवद और रगैनी । बाबूश्याम सुन्दर दास ने 'कबीर ग्रन्थावली' में कबीर की रचनाओं का संकलन किया । कबीरदास जी के नाम पर हिन्दी में लगभग 65 रचनाएं उपलब्ध है । जिसमें से 43 प्रकाशित हो चुकी है । गुरू ग्रन्थ साहिब में भी कबीर के दोहे संकलित है । कबीर पर सूफियों की 'प्रेम की पीर' का प्रभाव पड़ा । कबीर की मृत्यु के पश्चात् उनकी गद्दी धर्मदास को मिली । कबीर ने अपने गुरू रामनन्द से रामभक्ति का मंत्र प्राप्त किया था उनके राम 'दुष्ट दलन रघुनाथ' नहीं थे । राम से उनका अभिप्राय निर्गुण राम ईश्वर से था उनके शब्दों में –

दशरथ सुत तिहुँ लोक बखाना ।

राम नाम का मरम है आना ।।

कबीर ने राम में निर्गुण रूप में स्वीकार किया है । तब वह निर्गुण राम की उपासना का सन्देश देते है । निर्गुण राम जपहॅु ते भाई !' उनकी रामभावना नहा भावना से सर्वथा मिलती है । उनके राम निर्गुण राम के ही पर्यायवाची है । जहाँ, जीव, जगत, माया आदि तत्वों का निरूपण उन्होने भारतीय अहैतवाद के अनुसार किया है । उनके अनुसार जगत् में जो कुछ भी है, वह ब्रहा ही है । अन्त में सब ब्रहा में ही विलीन हो जाता है ।

पानी ही ते हिम भया, हिम है गया विलाप ।

जो कुछ था सोई भया, अब कुछ कहा न जाई ।।

संसार की मिथ्या व माया के भ्रम का अत्यन्त भी कबीर ने अद्वैतवादी विचाराधारा के अनुरूप किया है ।

कबीर माया पापणी हरि सूँ करै हराम ।

मुरवे गड़ियाली कृमति की कहरण न देई राम ।।

रहस्यवाद चेतना के साथ विश्व–चेतना की अनुभूति की अभिव्यक्ति होती है । 'रहस्यवाद' शब्द प्रायः काव्य की एक धारा विशेष को सूचित करता है ।

डॉ0 रामकुमार वर्मा 'कबीर' के रहस्यवाद में कहते है:

'' रहस्यवाद जीवात्मा की उस अन्तर्हित प्रदति का प्रकाशन है । जिसमें वह दिव्य और आलौकिक शक्ति से अपना शान्त और निश्चल सम्बन्ध जोड़ना चाहती है । यह सम्बन्ध यहॉ तक बढ़ जाता है कि दोनों में कुछ भी अन्तर नही रह जाता जीवात्मा की शक्तियां इसी शक्ति के अनन्त वैभव और प्रभाव से ओत–प्रोत हो जाती है ।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल में जायसी के रहस्यवाद का विवेचन करते हुए रहस्यवाद के दो भेद किये है ।

1. साधनात्मक रहस्यवाद ।
2. भावात्मक रहस्यवाद ।

- कबीर के 'रहस्यवाद' के सम्बन्ध में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने योग साधना से सम्बन्ध होने के कारण ही कबीर को रहस्यवाद को साघनात्मक रहस्यवाद माना है।
- रहस्यवाद में अहम एवं 'इदम' की भावना का क्रमशः लोप होता जाता है । रहस्यवाद समस्त रूपों के भीतर से चंचल रूप के बंधन को अतिक्रम करके ध्रुव सत्य की ओर चलने ही चेष्टा करता है ।

  कबीर की रचनाओं में अद्वैतबाद सफीमत एवं व्यापक तीनों दर्शनों की छाप मौजूद है । वे अद्वैतवाद के कारण एकमात्र एवं निरपेक्ष परम तत्व की सत्य मानते है उनके ब्रहम की स्वरूप अद्भुत है और उसकी गति 'अगम' है ।

रहस्यवाद की चार विशेषताएं है

1. प्रेम
2. आध्यात्मिकता
3. जागरण का सातव्य एवं अनन्त की ओर भावना के साथ–साथ हृदय की उन्मुखल।
4. अग्रसरण ।

कबीर के रहस्यवाद में ये चारों विशेषताएँ मिलती है । कबीर का रहस्यवाद गहरा है । क्योकि कबीर में अनुमति एवं अभिकारी दोनों से सरोकार है ।

कबीर रूप और सीमा को ही 'गुण' कहते है । उनका निर्गुण गुण का विरोधी नही है । निर्गुण परमात्मा के गुणों में भी विद्यमान है । कबीर मानते है कि गुण से ही निर्गुण का अनुमान किया जा सकता है । रूप से ही उसकी ओर उल्लेख हुआ जा सकता है ।

'' संतो धोखा कांस कहिये

गुण में निरगुण में गुण

बाँट छाँडि क्यों बहिये ?''

उनके ब्रहम के पास न मुँह है न भाषा है, न कुरूप है वह सूक्ष्म से ही सूक्ष्म है ।

''पुहप –वामते पातला, ऐसा रूप अनूप ''

अपने अद्वितवादी ब्रहा में प्राप्त करने के लिए कबीर ने माया को तिलात्र्जलि दी, सूफीमत से प्रेम किया एवं हिन्द में ही बेहद को तलाशने तरासने के लिए नाथपंथ में योग में अपनाया । उनकी रचनाओं में रहस्यवाद की तीनों स्थितियों परिपाक मिलती है ।

पहली स्थिति : चिर पिपासा जाग्रत होने की स्थिति यह गुरू की सहायता से ही सम्भव है । गुरू साध्क के दडय में उस ब्रहा के लिए एक

चाह पैदा कर देता है । सादक उस चाह की तृप्ति के लिए बैचने हो जाता है ।

कबीर कहते है –

''घट–घट में रत्ना लागि रही

पर घट हुआ लोख जी''

रूपी नाव पर चढ़कर भवसांगर की पार करना चाहता था उसमें मैं डूबने वाला ही था, किन्तु गुरू की अनुग्रह–तरंग चमकी जिससे में जर्जर भाव से उतरकर बच गया ।

''डूबा था मैं उबरा, गुरू की बहरि चमकी ।

मेरा देख्या जरवरा उतरि पड़े फरकि ।।''

सदगुरू ने कबीर को वाण से आहत किर दिया है और उनके तन, बदन में दावाग्नि भी फूट पड़ी है ।

सतगुरू माहमा वाण भरि ।

.... गई दवा सू फूटि

- कबीर के रहस्यवाद की दूसरी स्थिति प्रेम, विरह एवं प्रियतम के आलंखा किसी ओर में नही देखने की हो यहॉ पहुॅचकर साजक संसार की वस्तुओं के प्रति आकृर्षित नही होता :

''दुई–दुइ लोचन फेखा ।.

हरि बिनु अउरू न देख।''

- कबीर के रहस्यवाद की तीसरी विशेषता है आत्म और परमात्मा के एकीकरण की स्थिति कबीर ने रहस्यवाद की तीसरी स्थिति है । रहस्यवाद की यह चरम सीमा है । यहॉ मैं और का द्वैत खत्म हो जाता है :

''मैं सवनि ओपने में हॉ सब

मेरी विलगि –विलगि बिल गाई हो

मेरे कहो कबीर, कोई म्हौ रामराई हो''

ऐसी स्थिति में आलौकिक आनन्द का प्रवाह आत्मा को संसार से विमुख कर देता है । दोनों की मात्रा मिलकर एक हो जाती है और तब परमात्मा आत्मा में प्रकट हो कि घोषित करता है ।

''मोको कहॉ ढूढे बंदे ।

मैं तो तेरे पास मैं ।।''

वृहा समस्त काल की सीमाओं के परे है । यहॉ न काल का बन्धन है और न भूत–भविष्य का भेद–कबीरदास मध्यकालीन संत काव्य धारा में सर्वश्रेष्ठ कवि है । कबीर जो एक महान समाज सुधारक एवं युगदृष्टा थे । उन्होने समाज में व्याप्त जाति भेद ब्राहाम्बर, सकीर्णता ढोंग आदि का खुलकर विरोध किया एवं भाईचारे की भावना को स्थापित किया । कबीर जहॉ एक ओर दार्शनिक चिंतन किया तो दूसरी ओर भक्तिभावना की प्रेरणा जनमानस की है ।

कबीर ने सामाजिक चेतना, व्यग्य रूप , संकट सुधारक विद्रोही या युग दर्पण आदि सभी कार्यो का वर्णन निम्न बिन्दुओं के माध्यम से जाना जा सकता है ।

धार्मिक पाखण्ड

कबीर स्वच्छन्द विचारक थे । वे मानवतावादी आस्था के साथ एकांध में सुधार लाना चाहते थे । धर्म के ठेकेदार बनने वाले पण्डित– पुजारीयों, ढोंगी साधु–मुल्ला , फकीरों आदि में कबीर ने खूब फटकारा । कबीर में हिन्दू –मुसलमानों दानों के पाखण्डों का खण्डन किया तथा उन्हें सच्चे मानव धर्म में अपनाने के लिए प्रेरित किया ।

– मुसलमानों के पाखण्ड

''कांकर पाथर जोडि के मसजिद लई चुनाम ''

– ''हिन्दु अपनी करे बड़ाई गागति छुउन न देई''

कबीर ने मूर्ति–पूजा का खण्डन किया और मन मन्दिर में ही ईश्वर का निवा बताया उन्होने कहा है ।

''पाहर पूछै हरि मिलै तो मैं पूज पहार''

यदि पत्थर पूजने से भगवान मिले तो मैं पहाड़ की पूजा करने लंगू। यह अब ढोंग है इसमें अच्छा तो यह है कि हम घर की उस चक्की में पूजे जिसका पीसा हुआ हम आटा खाते है ।

कबीर रूढ़ियों एवं अडम्बरो के सतत् विरोधी रहे । उन्होने रोजा, नवाज़, छापा, तिलक, माला, गंगास्नान, तीर्थरत आदि का मुख्य विरोध किया ।

– ''माला फेरत जुग गया, गया न मन का फेर''

– ''दिन में रोजा रहत है । राति हलत है गाय'' ।

– ''केसन कहॉ बिगारिका जो मूडे सो बार''

इन आडम्बरों से खुदा नही मिलने वाला । छुआछूत का विरोध कबीर ने अपने समय में फैली छुआछूत की भावना का तीखा विरोध किया है ।

– ''जो तू बामन बामनी जाया ।
आन वाट है क्यों नहीं आया?''

– ''जो तू तुरकिनी जाया
भीतर खतना क्यों न कराया''

– हमारे कैसे लोहू तुम्हारे कैसे दुद
तुम कैसे वामन पाण्डे हम कैसे सूद?''

अवतारवाद का खण्डन कबीर जी ने अपने व्यंग्यो के माध्यम से कई जगह किया । वे 'राम' में तुलसी के राम न का मानस निर्गुण व्रहा मानते है ।

'' दसत्व सुत लिहूँ लोक बरवाना
राम नाम का करम है आना''

कबीर शास्त्र ज्ञान का पुस्तक ज्ञान का खण्डन करते है तथा आचरण की शुद्वता पर बल देते है और प्रेम की बात कहते है ।

'' पोथी पढ़ि–पढ़ि जग मुआ पंडित भया ना कोई
ढाई अक्षर प्रेम का पढे सौ पंडित होय'' ।।

राम रहीम की एकता पर बल कबीर ने राम–रहीम, केशव, महादेव और मोहम्मद की एकता पर बल दिया है । उन्होने सम्पूर्ण समाज को एकता में बांधने का काम किया ।

''हिन्दु तुरक की एक राह है सतगुरू भेहै बताई''

कबीर के काव्य में हर वह चीज मिलती है जिसे छोटे से छोटे व्यक्ति तथा बड़े से बड़ा व्यक्ति पर व्यंग्य करके उनको सही राह दिखाने का काम किया गया है । समाज में कबीर की प्रांसगिता उसी तरह जरूरी है जैसे मछली के लिए जल वैसे ही बिना कबीर के ज्ञान अधूरा है । कबीर का रहस्यवाद साधनात्कर एवं भावत्कर दोनो कोतियो का है ।साधनात्कर रहस्यवाद में वे हठयोगियों से प्रभावित है । हठयोगी साधना का उल्लेख उन्होने इस प्रकार किया है :–

सागर नाही सीष बिन, स्वांति वन्द भी नाहि ।
कबीर मोती नीषजै, सुग्नि फिसर गढ़ माहि ।।

कबीर की भाषा मुख्य रूप से मेष अवधी एवं खड़ी बोली का मिश्रण है । जिसमें कहीं–कहीं भोजपुरी, पंजाबी एवं राजधानी भाषा के तत्व भी मिलते है ।

- 'आचार्य रामचन्द्र शुक्ल' में कबीर की भाषा में पंचमेली खिचड़ी या 'सदुक्कडी भाषा कहा गया है ।

  डा0 बिन्दुमाघव मिश्र ने कहा :–

  ''कबीर के पदों की भाषा प्रमुखता ब्रज साखियों की राजस्थानी तथा खड़ी बोली

और रमैनी की भाषा प्रधानरूप से अवधी है।''

श्यामसुन्दर दास कहते हैः–

''कबीर की भाषा का निर्णय करना टेढ़ी खीर है, क्योंकि वह खिचड़ी है । खड़ी बोली पजाबी, राजस्थानी, अरबी, फारसी आदि अनेक भाषाओं का पुट भी उनकी 3 मियों पर चढ़ा हुआ है । कबीर का ज्ञान विस्तृत था, उन्होने पर्याप्त देषाटन भी किया था, अतः उनकी भाषा मे अनेक बोलियों का सम्मिलित होना स्वाभाविक है । कबीर भले ही भोजपुरी क्षेत्र (बनारस) के निवासी रहे है किन्तु भाषा भी अनेक बोलियों के शब्द उपलब्ध होते है ।''

कबीर में भले ही अलंकार शास्त्र की जानकारी न रही हो किन्तु उनके काव्य में अलंकारों छंदों, आप्रस्तुत विधान तथा प्रतीक विधान की छटा विद्यमान है । कबीर का लक्ष्य कविता करना नही था । वे एक सच्चे साधक एवं भक्त थे अपनी अनुमूर्तियों में अभिव्यक्त करने के लिए उन्होने कविता का सहारा भर लिया है । कबीर के काव्य में कुछ अलंकारो के उदाहरण :

1 अन्योक्ति : मदे री नालिनी न कुम्हिलानी तेरे ही नील सरोवर पानी

2 दृष्टान्त : सन्त न छाड़े सन्तई जे कोटिन मिलै असत्य चन्दन भुवंगस बेठिया सीतलता न तजंत

प्रतीक के द्वारा अदृश्य, अगोचर, अप्रस्तुत में प्रस्तुत, गोचर एवं दृश्य बनाकर, काव्य में रखा जाता है । कबीर के काव्य में भी ऐसा देखने में मिलता है ।

" गंगतीर मोरी खेती वाली जमुन तीर खलिहाना"

यहाँ इडा पिंग्ला नदियों के लिए प्रतीक रूप में गंगा–यमुना नदियों का प्रयोग किया गया है ।

अततः कबीर अपने समय में युग निर्माता बनकर उभरे थे और आज भी युग को सही राह पर लाने के लिये कबीर की प्रासगिकता पर रोशनी डालनी जरूरी है । हिन्दी साहित्य कबीर नाम की उपाधि को काफी कवियों के काव्य का आंकलन किया गया क्योंकि कबीर की हस्ती के नाम पर जोड़ने से ही आपका कवि भुगनिर्माता के नाम से उभरता है । परन्तु जो खुशी खुद ही पहचान बनाने में हो वह किसी भी परछाई बनने में नहीं है यह वक्तव्य कबीर के सन्दर्भ में सटीक बैठता है और उनके सत्य की आपके सन्दर्भ में प्रासंगिकता में क्या बयां करता है?

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. कबीर सागर (कबीर ग्रंथावल) डा0 श्यामसुन्दर दास, नागरी प्रयोगिकी ।
2. कबीर काव्यों से परे की कहानी भारत भूषण, वेव दुनिया ।
3. हिन्दी साहित्य की भूरिम हजारी प्रसाद द्विवेदीख राजमहल प्रकाशन ।
4. हिन्दी साहित्य का इतिहास – रामचन्द्र शुक्ल, नागरी प्रयारिकी सभा
5. कबीर के आलोचक – डा0 धर्मवीर, वाणी प्रकाशन ।

Copyright © 2017, Jyoti Kumari. This is an open access refereed article distributed under the creative common attribution license which permits unrestricted use, distribution and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.